सूरह — एक कहानी

सूरह आल-'इमरान

'इमरान का घराना

पूरा सफ़र — एक चुना हुआ घराना, एक दिन नुक़सान का —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 3 • 200 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना ब'अ्द इज़ हदैतना
8. हमारे रब, हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर उस के बाद कि तूने हमें हिदायत दी।

कुल्लमा दख़ल 'अलैहा ज़करिय्यल्-मिह्राब वजद 'इन्दहा रिज़्क़ा
37. जब भी ज़करिया उस के पास मेहराब में दाख़िल होते, उस के पास रिज़्क़ पाते।

वअ्-तसिमू बि-हब्लिल्-लाहि जमी'अंव्-व ला तफ़र्रक़ू
103. और अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर मज़बूती से थाम लो और अलग अलग मत हो।

व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ्लौन इन कुन्तुम मुअ्मिनीन
139. तो कमज़ोर मत पड़ो और ग़म मत करो; तुम ही बुलंद रहोगे अगर तुम मोमिन हो।

फ़-बिमा रहमतिम्-मिनल्-लाहि लिन्त लहुम
159. तो अल्लाह की रहमत ही से तुम उन के लिए नर्म हो गए।

रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिला
191. हमारे रब, तूने ये बे-मक़्सद नहीं बनाया।

पुख़्ता और मुतशाबिह

बेटा, ये सूरह अपना नाम 'इमरान के घराने से लेती है — मरयम (अलैहा0) का घराना — और ये मदीना में नाज़िल हुई, बड़े हिस्से में उहुद की जंग के आस-पास के दौर में, और अहल-ए-किताब के साथ लंबी गुफ़्तगुओं के सिलसिले में।

ये ज़िंदा ख़ुदा के बयान से खुलती है: '**अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल्-हय्युल्-क़य्यूम — अल्लाह — उसके सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िंदा, सब को क़ायम रखने वाला।**'

और फिर, बेटा, ये इस किताब को पढ़ने का एक ऐसा उसूल देती है जो पूरी ज़िंदगी आपकी हिफ़ाज़त करेगा:

'**हुवल्-लज़ी अन्ज़ल 'अलैकल्-किताब मिन्हु आयातुम्-मुह्कमातुन हुन्न**

उम्मुल्-किताबि व उख़रु मुतशाबिहात — वही है जिसने तुम पर किताब उतारी; उस में कुछ आयतें पुख़्ता हैं — वही किताब की अस्ल हैं — और दूसरी मुतशाबिह (जिनका पूरा मतलब वाज़ेह नहीं)।'

'**फ़-अम्मल्-लज़ीन फ़ी क़ुलूबिहिम ज़ैग़ुन फ़-यत्तबि'ऊन मा तशाबह मिन्हुब्-तिग़ा-अल्-फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ्वीलिह — तो जिन के दिलों में टेढ़ा-पन है वो उन के पीछे पड़ते हैं जो मुतशाबिह हैं, फ़ित्ना ढूँढते हुए और उनकी ता'वील ढूँढते हुए।**'

बेटा, इसे समझिए, क्योंकि ये तक़रीबन हर उस दीनी बहस को समझा देता है जो आप कभी देखेंगे।

'**मुह्कमात**' — साफ़, क़त'ई आयतें — को '**उम्मुल-किताब**', किताब की **माँ** कहा गया। **वही जगह है जहाँ आप जीते हैं: नमाज़ पढ़ो, सच बोलो, माँ-बाप की इज़्ज़त करो, ज़ुल्म मत करो, अल्लाह एक है।**

और '**मुतशाबिहात**' वो हैं जिनका पूरा मतलब हम तक नहीं पहुँचता।

और अल्लाह कहते हैं कि जिस शख़्स के दिल में बीमारी है वो ख़ास तौर पर **उन्हीं** की तरफ़ खींचा जाता है — **उन साफ़ अहकाम की तरफ़ नहीं जिनपर उसे अमल करना है, बल्कि उन मुबहम बातों की तरफ़ जिनपर वो बहस कर सके।** बेटा, ग़ौर कीजिए कि **एक ख़ास क़िस्म का शख़्स हमेशा दीन के सब से अजीब-ओ-ग़रीब सवाल पर बात करना चाहता है और उस नमाज़ पर कभी नहीं जो वो छोड़ रहा है।**

'**वर्-रासिख़ून फ़िल्-'इल्मि यक़ूलून आमन्ना बिही कुल्लुम्-मिन 'इन्दि रब्बिना — और जो इल्म में पुख़्ता हैं वो कहते हैं: हम इस पर ईमान लाए; ये सब हमारे रब की तरफ़ से है।**'

बेटा, **यही अस्ली इल्म की निशानी है: उस चीज़ के साथ सुकून जो आप पर वाज़ेह नहीं की गई।**

और फिर उनकी दुआ, बेटा — और ये वो है जो आपको रोज़ाना कहनी चाहिए:

'**रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना ब'अ्द इज़ हदैतना व हब लना मिल्-लदुन्क रहमह — हमारे रब, हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर उस के बाद कि तूने हमें हिदायत दी, और हमें**

अपनी तरफ़ से रहमत अता कर — इन्नक अन्तल्-वह्हाब — बेशक, तू ही बहुत देने वाला है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए वो किस चीज़ से डरते हैं: **माल या सेहत खोने से नहीं। हिदायत पा लेने के बाद उसे खो देने से।** और नबी ﷺ अक्सर कहा करते थे: ऐ दिलों को फेरने वाले, मेरा दिल अपने दीन पर जमा दे।

बेटा, दिल को अरबी में '**क़ल्ब**' कहा जाता है, उस अस्ल से जिसका मतलब **उलटना और बदलना** है। **किसी की हिदायत कल की हिदायत से ज़मानत-शुदा नहीं। इसी लिए ये दुआ मौजूद है।**

वो औरत जिसने मन्नत मानी

और अब, बेटा, वो कहानी जो इस सूरह को उसका नाम देती है — और ये एक औरत के उस वादे से शुरू होती है जो उसने एक ऐसे बच्चे के बारे में किया जो अभी पैदा भी न हुआ था।

'**इज़ क़ालतिम्-र-अतु 'इमरान रब्बि इन्नी नज़र्तु लक मा फ़ी बत्नी मुहर्ररन फ़-तक़ब्बल मिन्नी — जब 'इमरान की बीवी ने कहा: मेरे रब, मैंने जो मेरे पेट में है उसे तेरे लिए मन्नत मान लिया, (तेरी ख़िदमत के लिए) आज़ाद, तो ये मुझ से क़ुबूल फ़रमा — इन्नक अन्तस्-समी'उल्-'अलीम** — बेशक, तू ही सुनने वाला, जानने वाला है।'

बेटा, उसने बच्चे को इबादत-गाह की ख़िदमत के लिए मन्नत माना, एक बेटे की तवक़्क़ो में — क्योंकि उस रिवायत में वो ख़िदमत मर्दों के लिए थी।

'**फ़-लम्मा वज़'अत्हा क़ालत रब्बि इन्नी वज़अ्तुहा उन्सा — मगर जब उसने उसे जन्म दिया, तो बोली: मेरे रब, मैंने तो लड़की जनी है — वल्लाहु अअ्लमु बिमा वज़'अत — और अल्लाह ख़ूब जानते थे जो उसने जना — व लैसज़्-ज़करु कल्-उन्सा — और लड़का लड़की जैसा नहीं — व इन्नी सम्मैतुहा मरयम — और मैंने उसका नाम मरयम रखा — व इन्नी उ'ईज़ुहा बिक व ज़ुर्रिय्यतहा मिनश्-शैतानिर्-रजीम — और मैं उसे और उसकी नस्ल को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से।**'

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए। **उसकी आवाज़ में मायूसी है — उसने एक बेटे का मंसूबा बनाया था और मंसूबा पूरा न हुआ। और अल्लाह का तब्सिरा ठीक उसके जुमले के बीच में रख दिया गया: 'और अल्लाह ख़ूब जानते थे जो उसने जना।'**

बेटा, मतलब: **तुमने समझा कि इस काम के लिए एक बेटे की ज़रूरत थी। मैं जानता था कि मैं तुम्हें क्या दे रहा हूँ।**

और उस 'मायूसी' से क्या निकला? **मरयम — पूरे क़ुरआन में नाम से ज़िक्र की गई वाहिद औरत, जिसके नाम पर एक सूरह है, और एक नबी की माँ।**

बेटा, इसे थामे रखिए जब भी आपका कोई मंसूबा उस से कुछ और पैदा करे जो आपने माँगा था।

और ग़ौर कीजिए एक माँ के तौर पर उसका पहला अमल: **उसने अपनी बेटी और उसकी नस्ल के लिए शैतान से पनाह माँगी।** बेटा, और रिवायत है कि हर बच्चे को पैदाइश पर शैतान छूता है सिवाए मरयम और उनके बेटे के, इसी दुआ की वजह से।

'फ़-तक़ब्बलहा रब्बुहा बि-क़बूलिन हसनिंव्-व अम्बतहा नबातन हसनंव्-व कफ़्फ़लहा ज़करिय्या — तो उसके रब ने उसे अच्छी तरह क़ुबूल किया और उसे अच्छे अंदाज़ में परवान चढ़ाया, और उसे ज़करिया की किफ़ालत में दे दिया।'

बेटा, '**अम्बतहा नबातन हसना**' — उन्होंने उसे यूँ **उगाया** जैसे एक पौदा उगाया जाता है। **एक अच्छी तरह पाले गए बच्चे का क्या ख़ूबसूरत बयान।**

'कुल्लमा दख़ल 'अलैहा ज़करिय्यल्-मिहाब वजद 'इन्दहा रिज़्क़ा — जब भी ज़करिया उस के पास मेहराब में दाख़िल होते, उस के पास रिज़्क़ पाते — क़ाल या मरयमु अन्ना लकि हाज़ा — उन्होंने कहा: ऐ मरयम, ये तेरे पास कहाँ से आया? — क़ालत हुव मिन 'इन्दिल्-लाह — उसने कहा: ये अल्लाह की तरफ़ से है — इन्नल्-लाह यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बि-ग़ैरि हिसाब — बेशक, अल्लाह जिसे चाहें बे-हिसाब रिज़्क़ देते हैं।'

बेटा, ये जवाब याद कर लीजिए: '**हुव मिन 'इन्दिल्लाह**'. **चार लफ़्ज़ जो एक नौजवान औरत ने एक नबी को दिए।**

और ग़ौर कीजिए रिज़्क़ **कहाँ** पाया गया: **मेहराब में — इबादत की जगह पर। वो अपने रब में मशग़ूल थी, और उसका रिज़्क़ वहीं उसके पास आया जहाँ वो खड़ी थी।**

एक नबी औलाद माँगता है

बेटा, और देखिए उस मंज़र ने ज़करिया (अलैहि0) पर क्या किया। **उन्होंने मेहराब में एक लड़की के पास बे-मौसम फल आते देखे — और उन के अंदर कुछ जाग उठा।**

'**हुनालिक द'आ ज़करिय्या रब्बह — उसी जगह ज़करिया ने अपने रब को पुकारा — क़ाल रब्बि हब ली मिल्-लदुन्क ज़ुर्रिय्यतन तय्यिबह — उसने कहा: मेरे रब, मुझे अपनी तरफ़ से पाक औलाद अता कर — इन्नक समी'उद्-दु'आ** — बेशक, तू दुआ सुनने वाला है।'

बेटा, '**हुनालिक**' — **उसी लम्हे, वहीं।** वो बुढ़ापे तक बे-औलाद थे और ज़ाहिर है इस बात से सुलह कर चुके थे। और फिर उन्होंने एक सबूत देखा कि **अल्लाह आम रास्तों से हट कर भी देते हैं — और उन्होंने फ़ौरन अपनी ना-मुमकिन चीज़ माँग ली।**

बेटा, यही सबक़ है: **जब आप किसी दूसरे पर अल्लाह की सख़ावत देखें, तो उसे अपनी माँग बढ़ाने दीजिए, अपना हसद नहीं। किसी दूसरे की नेमत इस बात का सबूत है कि ख़ज़ाना खुला है।**

और फ़रिश्तों ने उन्हें पुकारा जब वो मेहराब में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे, उन्हें यह्या की ख़ुशख़बरी देते हुए। और उन्होंने हैरत से पूछा कि कैसे — जब वो बुढ़ापे को पहुँच चुके और उनकी बीवी बाँझ थी। और जवाब: '**कज़ालिकल्-लाहु यफ़्'अलु मा यशा — यूँ ही अल्लाह करते हैं जो चाहते हैं।**'

और फिर फ़रिश्तों ने मरयम से बात की: '**या मरयमु इन्नल्-लाहस्-तफ़ाकि व तह्हरकि वस्तफ़ाकि 'अला निसा-इल्-'आलमीन — ऐ मरयम, बेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे पाक किया और तुझे जहानों की औरतों पर चुन लिया।**'

'**या मरयमुक़्-नुती लि-रब्बिकि वस्जुदी वर्क'ई म'अर्-राकि'ईन — ऐ मरयम, अपने रब की फ़रमाँबरदार रह, और सजदा कर, और रुकू करने वालों के साथ रुकू**

कर।'

बेटा, **उसे उसका दर्जा बताया गया — और फ़ौरन और इबादत करने को कहा गया। इस दीन में दर्जा कोई इनाम नहीं जो आपको किसी चीज़ से माफ़ कर दे; ये ज़्यादा करने की एक वजह है।**

और उसे 'ईसा (अलैहि0) की ख़ुशख़बरी दी गई: '**इन्नल्-लाह युबश्शिरुकि बि-कलिमतिम्-मिन्हुस्-मुहुल्-मसीहु 'ईसब्-नु मरयम वजीहन फ़िद्-दुन्या वल्-आख़िरति व मिनल्-मुक़र्रबीन** — अल्लाह तुझे अपनी तरफ़ से एक कलिमे की ख़ुशख़बरी देते हैं, जिसका नाम मसीह, 'ईसा इब्न मरयम होगा — दुनिया और आख़िरत में बा-वक़ार और क़रीब किए गए लोगों में से।'

और कैसे? '**क़ालत रब्बि अन्ना यकूनु ली वलदुंव्-व लम यम्सस्नी बशर** — उसने कहा: मेरे रब, मेरे हाँ बच्चा कैसे होगा जब किसी मर्द ने मुझे छुआ नहीं? **क़ाल कज़ालिकिल्-लाहु यख़्लुक़ु मा यशा** — उसने कहा: यूँ ही अल्लाह बनाते हैं जो चाहते हैं — **इज़ा क़ज़ा अम्रन फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन फ़-यकून** — **जब वो किसी काम का फ़ैसला करते हैं तो बस उसे कहते हैं: हो जा — और वो हो जाता है।**'

'**इन्न मसल 'ईसा 'इन्दल्-लाहि क-मसलि आदम** — **बेशक, अल्लाह के नज़दीक 'ईसा की मिसाल आदम जैसी है** — **ख़लक़हू मिन तुराबिन सुम्म क़ाल लहू कुन फ़-यकून** — उसने उसे मिट्टी से बनाया, फिर उसे कहा: **हो जा — और वो हो गया।**'

बेटा, यही क़त'ई दलील है। **अगर बिना बाप के पैदाइश किसी को ख़ुदा बना देती है, तो फिर आदम का क्या, जिनका न बाप था न माँ? ग़ैर-मामूली तख़्लीक़ बनाने वाले की क़ुदरत का सबूत है, बनाई गई चीज़ के ख़ुदा होने का नहीं।**

एक बात जो हमारे दरमियान मुश्तरक हो

और फिर, बेटा, एक ग़ैर-मामूली वक़ार वाली दावत आती है — अहल-ए-किताब के नाम:

'**क़ुल या अह्लल्-किताबि त'आलौ इला कलिमतिन सवा-इम्-बैनना व बैनकुम** — **कहो: ऐ अहल-ए-किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे**

दरमियान बराबर है — अल्ला नअ्बुद इल्लल्-लाह व ला नुश्रिक बिही शै-अंव्-व ला यत्तख़िज़ ब'अ्ज़ुना ब'अ्ज़न अर्बाबम्-मिन दूनिल्-लाह — कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें, और उस के साथ किसी को शरीक न करें, और हम में से कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब न बनाए।'

बेटा, इसका अंदाज़ देखिए। '**त'आलौ**' — **आओ।** 'सुपुर्द हो जाओ' नहीं, 'मान लो कि तुम ग़लत हो' नहीं। **आओ — उस चीज़ की तरफ़ जिस पर हम दोनों खड़े हो सकें।**

और तीसरा हिस्सा ग़ौर कीजिए: **कि हम में से कोई दूसरों को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। इस में उलमा, लीडर और रिवायात सब शामिल हैं — हर जमाअत के लिए, हमारी समेत।**

सूरह इब्राहीम (अलैहि0) की पहचान भी तय कर देती है, जिन पर हर गिरोह दावा करता था: '**मा काना इब्राहीमु यहूदिय्यंव्-व ला नस्रानिय्यंव्-व लाकिन काना हनीफ़म्-मुस्लिमा — इब्राहीम न यहूदी थे न नसरानी, बल्कि वो हक़ की तरफ़ झुके हुए, मुसलमान थे — व मा काना मिनल्-मुश्रिकीन**।'

और फिर एक ऐसे दिल की बीमारी के बारे में तंबीह जो दूसरे की भलाई बर्दाश्त न कर सके: '**इन तम्सस्कुम हसनतुन तसुअ्हुम व इन तुसिब्कुम सय्यि-अतुंय्यफ़्रहू बिहा — अगर तुम्हें कोई भलाई छू जाए तो उन्हें बुरा लगता है; और अगर तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचे तो वो ख़ुश होते हैं — व इन तस्बिरू व तत्तक़ू ला यज़ुर्रुकुम कैदुहुम शै-आ — मगर अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो तो उनकी चाल तुम्हें ज़र्रा भर नुक़सान न देगी।**'

बेटा, हर उस शख़्स के लिए ये नुस्ख़ा याद रखिए जो आपका बुरा चाहता हो: **सब्र और तक़वा।** यही आपका पूरा दिफ़ा' है, और आयत कहती है कि चाल आपको 'शै-आ' — **ज़र्रा भर भी** — नुक़सान न देगी।

और फिर, बेटा, वो आयत जो बताती है कि अल्लाह की मोहब्बत अस्ल में क्या माँगती है:

'**क़ुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्-लाह फ़त्तबि'ऊनी युह्बिब्कुमुल्-लाहु व यग़्फ़िर लकुम ज़ुनूबकुम — कहो: अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी**

करो, अल्लाह तुम से मोहब्बत करेंगे और तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे।'

बेटा, उलमा ने इसे '**आज़माइश की आयत**' कहा। **बहुत से लोग अल्लाह से मोहब्बत का दावा करते हैं। ये आयत वो सबूत देती है जो क़ुबूल होता है: रसूल ﷺ की पैरवी। वो मोहब्बत जो पैरवी पैदा न करे, एक दावा है बिना सबूत के।**

और ये सौदा ग़ौर कीजिए: **आप पैरवी करते हैं — और अल्लाह आप से मोहब्बत करते हैं।** बेटा, **किसी मख़्लूक़ को इस से बुलंद चीज़ पेश की ही नहीं जा सकती।**

रस्सी को थामो, सब मिल कर

और अब, बेटा, एक जमाअत के लिए क़ुरआन के सब से ज़रूरी अहकाम में से एक:

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनुत्-तक़ुल्-लाह हक़्क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून — ऐ ईमान वालो, अल्लाह से ऐसे डरो जैसा उस से डरने का हक़ है, और मत मरना मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।'

'वअ्-तसिमू बि-हब्लिल्-लाहि जमी'अंव्-व ला तफ़र्रक़ू — और अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर मज़बूती से थाम लो, और अलग अलग मत हो।'

बेटा, अल्फ़ाज़ देखिए। '**इ'तिसाम**' का मतलब है किसी चीज़ को हिफ़ाज़त के लिए सख़्ती से पकड़ना — **जिस तरह एक डूबता हुआ आदमी रस्सी पकड़ता है।**

और '**जमी'अन**' — **सब मिल कर।** तो यहाँ दो हुक्म हैं, एक नहीं: **रस्सी थामो, और उसे मिल कर थामो। एक शख़्स रस्सी पकड़े हुए भी इस आयत की ना-फ़रमानी कर सकता है, क्योंकि उसने उसे अकेले पकड़ा है और बाक़ी सब थामने वालों से पीठ फेर ली है।**

'वज़्कुरू नि'अ्मतल्-लाहि 'अलैकुम इज़ कुन्तुम अअ्दा-अन फ़-अल्लफ़ बैन क़ुलूबिकुम फ़-अस्बह्तुम बि-नि'अ्मतिही इख़्वाना — और अल्लाह की उस नेमत को याद करो जब तुम दुश्मन थे और उसने तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उसकी नेमत से भाई बन गए — व कुन्तुम 'अला शफ़ा हुफ़्रतिम्-मिनन्-नारि फ़-अन्क़ज़कुम मिन्हा — और तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे, तो उसने तुम्हें

उस से बचा लिया।'

बेटा, याद रखिए: **वो क़बीले थे जो नस्लों से एक दूसरे को क़त्ल कर रहे थे। इत्तेहाद उनकी क़ुदरती हालत न थी — वो एक बचाव था।**

'वल्तकुम्-मिन्कुम उम्मतुंय्यद्'ऊन इलल्-ख़ैरि व यअ्मुरून बिल्-म'अ्रूफ़ि व यन्हौन 'अनिल्-मुन्कर — और तुम में से एक ऐसी जमाअत होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ बुलाए, अच्छाई का हुक्म दे और बुराई से रोके — **व उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून** — और वही कामयाब हैं।'

'कुन्तुम ख़ैर उम्मतिन उख़्रिजत लिन्-नास — तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए निकाली गई — तअ्मुरून बिल्-म'अ्रूफ़ि व तन्हौन 'अनिल्-मुन्करि व तुअ्मिनून बिल्लाह — तुम अच्छाई का हुक्म देते हो, बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो।'

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए, क्योंकि ये अक्सर सिर्फ़ पहले आधे हिस्से के साथ नक़्ल किया जाता है। **'बेहतरीन उम्मत' का दर्जा किसी नस्ल या पैदाइश का तमग़ा नहीं। ये तीन अमल से जुड़ा हुआ है, और ये कहता है 'उख़्रिजत लिन्-नास' — लोगों के लिए निकाली गई, इंसानियत के फ़ायदे के लिए।**

बेटा, तो **जिस लम्हे एक जमाअत अच्छाई का हुक्म देना छोड़ दे, बुराई से रोकना छोड़ दे, और लोगों के लिए फ़ायदा-मंद होना छोड़ दे — वो ख़ुद को इस बयान से अलग कर चुकी।**

उहुद: नुक़सान का दिन

बेटा, इस सूरह का बड़ा हिस्सा उहुद की जंग से मामला करता है, और **ये किसी भी किताब के सब से ईमानदार हिस्सों में से एक है — क्योंकि ये ख़ुद अल्लाह का तज्ज़िया है उस शिकस्त का जो मोमिनीन को पहुँची।**

आपको ख़ाका मालूम है: तीर-अंदाज़ों से कहा गया था कि चाहे कुछ भी हो, वो अपनी जगह पर ठहरे रहें। जंग मुसलमानों के हक़ में मुड़ी, और ज़्यादा तर तीर-अंदाज़ माल-ए-ग़नीमत जमा करने नीचे उतर आए। सवार दस्ता उनके पीछे से आ

गया। सत्तर सहाबा शहीद हुए, जिन में हम्ज़ा (रज़ि0) शामिल थे। ख़ुद नबी ﷺ ज़ख़्मी हुए, आपका दाँत टूटा और चेहरा ख़ून-आलूद हुआ।

और अल्लाह ने इसे सीधा मुख़ातिब किया: '**व लक़द सदक़कुमुल्-लाहु व'अ्दहू इज़ तहुस्सूनहुम बि-इज़्निही हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम व तनाज़अ्तुम फ़िल्-अम्रि व 'असैतुम मिम्-ब'अ्दि मा अराकुम मा तुहिब्बून** — और अल्लाह ने यक़ीनन तुम से अपना वादा सचा कर दिखाया जब तुम उनके इज़्न से उन्हें क़त्ल कर रहे थे, **यहाँ तक कि तुम हिम्मत हार बैठे और हुक्म के बारे में झगड़ने लगे और ना-फ़रमानी की, उस के बाद कि उसने तुम्हें वो दिखा दिया जो तुम चाहते थे — मिन्कुम मंय्युरीदुद्-दुन्या व मिन्कुम मंय्युरीदुल्-आख़िरह — तुम में से कुछ दुनिया चाहते हैं, और तुम में से कुछ आख़िरत।**'

बेटा, जो तरतीब नाम की गई वो देखिए: **उन्होंने हुक्म के बारे में झगड़ा किया, और फिर उसकी ना-फ़रमानी की — उस के बाद कि फ़तह पहले ही सामने थी। ख़तरा कामयाबी के लम्हे में आया, ख़ौफ़ के लम्हे में नहीं।**

और फिर तसल्ली, बेटा: '**व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ्लौन इन कुन्तुम मुअ्मिनीन — तो कमज़ोर मत पड़ो और ग़म मत करो; तुम ही बुलंद रहोगे, अगर तुम मोमिन हो।**'

'**इंय्यम्सस्कुम क़र्हुन फ़-क़द मस्सल्-क़ौम क़र्हुम्-मिस्लुह — अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म पहुँचा है तो उस क़ौम को भी ऐसा ही ज़ख़्म पहले पहुँच चुका — व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्-नास — और ये दिन हम लोगों के दरमियान बदलते रहते हैं।**'

बेटा, '**नुदाविलुहा बैनन्-नास**' — हम इन दिनों को लोगों में **घुमाते** हैं। **फ़तह के दिन और नुक़सान के दिन गर्दिश करते रहते हैं; कोई भी इन में से किसी को हमेशा के लिए नहीं पकड़ता।** और वजह बता दी गई: '**व लि-यअ्लमल्-लाहुल्-लज़ीन आमनू व यत्तख़िज़ मिन्कुम शुहदा** — ताकि अल्लाह ज़ाहिर कर दें कि कौन ईमान लाया, और तुम में से कुछ को शहादत दे दें।'

'**अम हसिब्तुम अन तद्ख़ुलुल्-जन्नत व लम्मा यअ्लमिल्-लाहुल्-लज़ीन जाहदू**

मिन्कुम — या तुमने समझा कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे इस से पहले कि अल्लाह ज़ाहिर कर दें कि तुम में से कौन कोशिश करता है?'

और एक सख़्त, ज़रूरी तस्हीह, बेटा — क्योंकि कुछ समझ बैठे थे कि नबी ﷺ क़त्ल हो गए और वो हिल गए थे:

'**व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूलुन क़द ख़लत मिन क़ब्लिहिर्-रुसुल — और मुहम्मद एक रसूल के सिवा कुछ नहीं; उन से पहले भी रसूल गुज़र चुके — अ फ़-इम्-मात औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम 'अला अअ्क़ाबिकुम — तो अगर वो मर जाएँ या क़त्ल कर दिए जाएँ, तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर पलट जाओगे?**'

बेटा, रिवायत है कि जब नबी ﷺ की वाक़ई वफ़ात हुई, लोग सदमे में थे और कुछ क़ुबूल करने से इनकार कर रहे थे — यहाँ तक कि अबू बक्र (रज़ि0) खड़े हुए और यही आयत पढ़ी। और 'उमर (रज़ि0) ने कहा कि उन्हें ऐसा लगा जैसे उन्होंने ये कभी सुनी ही न थी, और उनके पाँव उन्हें सँभाल न सके।

बेटा, सबक़ हर दौर के लिए क़ायम है: **आपका दीन अल्लाह से जुड़ा है, किसी शख़्स से नहीं — चाहे वो कितना ही अज़ीम, कितना ही महबूब हो। लोग मरते हैं। उलमा मरते हैं। लीडर नाकाम होते हैं। अल्लाह बाक़ी रहते हैं।**

और सूरह शुहदा का बयान करती है, बेटा: '**व ला तह्सबन्नल्-लज़ीन क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्-लाहि अम्वाता — और जो अल्लाह की राह में क़त्ल किए गए उन्हें हरगिज़ मुर्दा मत समझो — बल अह्या-उन 'इन्द रब्बिहिम युर्ज़क़ून — बल्कि वो ज़िंदा हैं, अपने रब के पास रिज़्क़ पा रहे हैं — फ़रिहीन बिमा आताहुमुल्-लाहु मिन फ़ज़्लिह** — उस पर ख़ुश जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।'

अगर तुम सख़्त होते

और अब, बेटा, उस सब के बाद — एक ऐसी शिकस्त के बाद जिसकी एक वजह सीधे हुक्म की ना-फ़रमानी थी — नबी ﷺ के अख़्लाक़ के बारे में एक ऐसी आयत आती है जिसे हर वालिद, उस्ताद और लीडर का अंदाज़ बदल देना चाहिए:

'**फ़-बिमा रहमतिम्-मिनल्-लाहि लिन्त लहुम — तो अल्लाह की रहमत ही से तुम**

उन के लिए नर्म हो गए — व लौ कुन्त फ़ज़्ज़न ग़लीज़ल्-क़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन हौलिक — और अगर तुम तुंद-मिज़ाज और सख़्त दिल होते, तो वो तुम्हारे आस-पास से बिखर जाते।'

बेटा, रुक कर इस आयत का वक़्त सोचिए। **उनके सत्तर सहाबा शहीद हो चुके थे। उनका अपना चेहरा ख़ून बह रहा था। और वजह में वो गिरोह भी शामिल था जो माल के लिए अपनी मुक़र्रर जगह छोड़ आया।**

कोई भी इंसान ग़ुस्से का हक़दार होता।

और अल्लाह कहते हैं: **ये अल्लाह की रहमत थी कि तुम उन के साथ नर्म रहे।** और फिर वो दूसरी सूरत का साफ़ नतीजा बता देते हैं: **वो तुम से दूर बिखर जाते।**

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। **सख़्ती कमरे को ख़ाली कर देती है। इस से फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप कितने सही हैं — एक सख़्त दिल और एक काटती हुई ज़ुबान आपका घर, आपकी क्लास, आपकी टीम, आपकी मस्जिद ख़ाली कर देगी।**

'फ़अ्फ़ु 'अन्हुम वस्तग़्फ़िर लहुम व शाविर्हुम फ़िल्-अम्र — तो उन्हें माफ़ कर दो और उन के लिए माफ़ी माँगो और मामले में उन से मशवरा करो।'

बेटा, एक महँगी ग़लती के बाद तीन हिदायात। **एक: उन्हें माफ़ कर दो। दो: अल्लाह से उन की बख़्शिश माँगो — उन लोगों के लिए दुआ करो जिन्होंने आपको नाकाम किया। तीन, और ये हैरत-अंगेज़ है: उन से फिर मशवरा करो।**

बेटा, **उहुद का नतीजा कुछ हद तक मशवरे पर अमल करने से आया था। और अल्लाह कहते हैं: उन से मशवरा करते रहो। एक नाकामी को इस की वजह मत बनाओ कि आप फिर कभी लोगों पर भरोसा न करें।**

'फ़-इज़ा 'अज़म्त फ़-तवक्कल 'अलल्-लाह — और जब तुम फ़ैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो — इन्नल्-लाह युहिब्बुल्-मुतवक्किलीन — बेशक, अल्लाह भरोसा करने वालों से मोहब्बत करते हैं।'

बेटा, तरतीब ग़ौर कीजिए: **मशवरा, फिर फ़ैसला, फिर भरोसा। मशवरा बे-इंतेहा बहस नहीं; किसी मुक़ाम पर फ़ैसला होता है और अल्लाह के सुपुर्द कर दिया जाता**

है।

'**इंय्यन्सुर्कुमुल्-लाहु फ़-ला ग़ालिब लकुम — अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करें तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता — व इंय्यख़्ज़ुल्कुम फ़-मन ज़ल्-लज़ी यन्सुरुकुम मिम्-ब'अ्दिह — और अगर वो तुम्हें छोड़ दें तो उस के बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे? — व 'अलल्-लाहि फ़ल्-यतवक्कलिल्-मुअ्मिनून**।'

मग़्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो

फिर सूरह मोमिनीन को एक दूसरे क़िस्म के मुक़ाबले की तरफ़ बुलाती है, बेटा:

'**व सारि'ऊ इला मग़्फ़िरतिम्-मिर्-रब्बिकुम व जन्नतिन 'अर्ज़ुहस्-समावातु वल्-अर्ज़ु उ'इद्दत लिल्-मुत्तक़ीन — और अपने रब की मग़्फ़िरत की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन जितनी है, परहेज़गारों के लिए तैयार की गई।**'

और फिर वो उनका बयान करते हैं, बेटा — चार सिफ़ात, और हर एक तवज्जोह के लायक़:

'**अल्लज़ीन युन्फ़िक़ून फ़िस्-सर्रा-इ वज़्-ज़र्रा — वो जो आसानी में और तंगी में ख़र्च करते हैं।**'

बेटा, **आसानी में और तंगी में। जब बहुत हो तब देना तवक़्क़ो के मुताबिक़ है। जब कम हो तब देना निशानी है।**

'**वल्-काज़िमीनल्-ग़ैज़ — और वो जो ग़ुस्सा पी जाते हैं।**'

बेटा, '**कज़्म**' उस मश्कीज़े के लिए इस्तेमाल होता है जिसे भर कर बाँध दिया जाए ताकि कुछ छलके नहीं। तो: **ग़ुस्सा मौजूद है, और उसे रोक लिया गया है। आयत ये नहीं कहती कि उन्हें कभी ग़ुस्सा आता ही नहीं — ये कहती है कि कुछ छलकता नहीं।**

'**वल्-'आफ़ीन 'अनिन्-नास — और वो जो लोगों को माफ़ कर देते हैं।**'

बेटा, और तरतीब ग़ौर कीजिए: **पहले वो ग़ुस्सा अंदर रोकते हैं, फिर वो माफ़ करते**

हैं। रोकना सिर्फ़ पहला मरहला है; मक़्सद रंजिश को पूरी तरह छोड़ देना है।

'**वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन** — और अल्लाह नेकी करने वालों से मोहब्बत करते हैं।' — और उलमा ने बढ़ाया: **रोकने और माफ़ करने के बाद इह्सान आता है, यानी उस शख़्स के साथ वाक़ई भलाई करना जिसने ज़ुल्म किया। तीन दर्जे, चढ़ते हुए।**

'**वल्-लज़ीन इज़ा फ़'अलू फ़ाहिशतन औ ज़लमू अन्फ़ुसहुम ज़करूल्-लाह फ़स्तग़्फ़रू लि-ज़ुनूबिहिम — और वो जो, जब कोई बे-हयाई कर बैठें या अपनी जान पर ज़ुल्म कर लें, अल्लाह को याद करते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं — व मंय्यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूब इल्लल्-लाह — और अल्लाह के सिवा गुनाह कौन बख़्शता है? — व लम युसिरूँ 'अला मा फ़'अलू व हुम यअ्लमून — और वो उस पर जमे नहीं रहते जो उन्होंने किया, जब कि वो जानते हैं।**'

बेटा, नेकों का ये बयान देखिए: **वो गुनाह करते हैं। क़ुरआन की अपनी तस्वीर में जन्नत वालों का फिसलना शामिल है। फ़र्क़ करने वाली चीज़ वो है जो उस के बाद होता है — वो याद करते हैं, माफ़ी माँगते हैं, और वो उस पर जमे नहीं रहते।**

बेटा, तो **सवाल कभी ये नहीं कि 'क्या मुझ से गुनाह हुआ?' सब से हुआ है। सवाल ये है: क्या मैं उस पर जमा हुआ हूँ?**

निशानियों की रात

और अब, बेटा, सूरह अपने आख़िरी हिस्से तक पहुँचती है — और यही वो आयतें हैं जो नबी ﷺ रात को जाग कर पढ़ा करते थे। रिवायत है कि आप जागते, आसमान की तरफ़ देखते, और 'इन्ना फ़ी ख़ल्क़िस्-समावाति वल्-अर्ज़' से सूरह के आख़िर तक पढ़ते।

'**इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्-समावाति वल्-अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्-लैलि वन्-नहारि ल-आयातिल्-लि-उलिल्-अल्बाब — बेशक, आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और रात और दिन के बदलने में अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं।**'

'**अल्लज़ीन यज़्कुरूनल्-लाह क़ियामंव्-व क़ु'ऊदंव्-व 'अला जुनूबिहिम — जो अल्लाह को खड़े, बैठे, और अपनी करवटों पर याद करते हैं — व यतफ़क्करून फ़ी**

ख़ल्क़िस्-समावाति वल्-अर्ज़ — **और आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ पर ग़ौर करते हैं:**'

'**रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिला — हमारे रब, तूने ये बे-मक़्सद नहीं बनाया — सुब्हानक फ़-क़िना 'अज़ाबन्-नार — तू पाक है; तो हमें आग के अज़ाब से बचा ले।**'

बेटा, देखिए इन दो आयतों में क्या होता है। **एक शख़्स रात के आसमान की तरफ़ देखता है और ग़ौर करता है। और वो ग़ौर हैरत पर ख़त्म नहीं होता — वो एक दुआ पर ख़त्म होता है।**

बेटा, **यही फ़र्क़ है एक मोमिन के कायनात देखने में और किसी और में। सितारों को ख़ूबसूरत कोई भी पा सकता है। मोमिन देखता है और नतीजा निकालता है: ये बे-कार नहीं बनाया गया — तो मैं बे-कार नहीं बनाया गया — तो मुझ से पूछा जाएगा।**

और तीन हालतें ग़ौर कीजिए: **खड़े, बैठे, और लेटे हुए।** बेटा, **कोई ऐसी हालत नहीं जिस में एक शख़्स अल्लाह को याद करने से माफ़ हो। बिल्कुल चित लेटे हुए, इतने बीमार कि हिल न सकें, तब भी आप ये कर सकते हैं।**

और फिर दुआएँ जारी रहती हैं, बेटा — और ये क़ुरआन की सब से मुकम्मल दुआओं में से हैं:

'**रब्बना इन्नक मन तुद्ख़िलिन्-नार फ़-क़द अख़्ज़ैतह** — हमारे रब, बेशक जिसे तू आग में दाख़िल करे तूने उसे रुसवा कर दिया — **व मा लिज़्-ज़ालिमीन मिन अन्सार**।'

'**रब्बना इन्नना समिअ्ना मुनादिय्युनादी लिल्-ईमानि अन आमिनू बि-रब्बिकुम फ़-आमन्ना — हमारे रब, हमने एक पुकारने वाले को ईमान की तरफ़ पुकारते सुना: अपने रब पर ईमान लाओ — तो हम ईमान ले आए।**'

'**रब्बना फ़ग़्फ़िर लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर 'अन्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना म'अल्-अब्रार — हमारे रब, हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयाँ हम से दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे।**'

'**रब्बना व आतिना मा व'अत्तना 'अला रुसुलिक व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामह**

— हमारे रब, हमें वो अता कर जिसका तूने अपने रसूलों के ज़रिए वादा किया, और हमें क़ियामत के दिन रुसवा मत कर — **इन्नक ला तुख़्लिफ़ुल्-मी'आद** — बेशक, तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।'

और उनके रब ने उन्हें जवाब दिया, बेटा: '**फ़स्तजाब लहुम रब्बुहुम अन्नी ला उज़ी'उ 'अमल 'आमिलिम्-मिन्कुम मिन ज़करिन औ उन्सा ब'अ्ज़ुकुम मिम्-ब'अ्ज़** — **और उनके रब ने उन्हें जवाब दिया: मैं तुम में से किसी अमल करने वाले का अमल ज़ाया नहीं करता, चाहे मर्द हो या औरत; तुम एक दूसरे में से हो।**'

बेटा, '**ला उज़ी'उ 'अमल 'आमिलिम्-मिन्कुम**' — **मैं किसी काम करने वाले का काम ज़ाया नहीं होने देता। एक अमल भी नहीं, किसी से भी, कभी भी।**

और फिर आराम-देह लोगों से मुतअस्सिर होने के ख़िलाफ़ एक तंबीह: '**ला यग़ुर्रन्नक तक़ल्लुबुल्-लज़ीन कफ़रू फ़िल्-बिलाद** — **काफ़िरों का शहरों में आना-जाना तुम्हें धोके में न डाल दे** — **मता'उन क़लीलुन सुम्म मअ्वाहुम जहन्नम** — एक थोड़ा सा फ़ायदा, फिर उनका ठिकाना जहन्नम है।'

और इस सूरह की आख़िरी आयत, बेटा — एक ऐसी जमाअत के लिए चार हुक्म जो अभी अभी एक शिकस्त से गुज़री है:

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनुस्-बिरू व साबिरू व राबितू वत्तक़ुल्-लाह ल'अल्लकुम तुफ़्लिहून** — **ऐ ईमान वालो: सब्र करो, और सब्र में बाज़ी ले जाओ, और अपनी जगह पर जमे रहो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम कामयाब हो।**'

बेटा, ख़त्म करने को चार लफ़्ज़।

'**इस्बिरू**' — सब्र करो, अपने आप में, उस पर जो तुम्हारे साथ होता है।

'**व साबिरू**' — और दूसरी तरफ़ से ज़्यादा ठहर जाओ; उन से ज़्यादा सब्र करो जो तुम्हारे मुख़ालिफ़ हैं। बेटा, **बहुत सी जद्दो-जहद सिर्फ़ इस से जीती जाती हैं कि कौन आख़िर में हार माने।**

'**व राबितू**' — अपनी चौकी से बँधे रहो, अपनी जगह पर जमे रहो, सफ़ क़ायम रखो। और उलमा ने इसे सरहद की निगेहबानी से और एक नमाज़ के बाद दूसरी का

इंतेज़ार करने से भी जोड़ा।

'**वत्तक़ुल्-लाह**' — और अल्लाह से डरो। **क्योंकि ऊपर की हर चीज़ बे-कार है अगर आप ये छोड़ दें।**

बेटा, और यही सूरह आल-'इमरान है: **एक औरत जो बेटी पर मायूस हुई और उसे मरयम मिली; एक नबी जिसने किसी दूसरे की नेमत देखी और अपनी माँगने की हिम्मत की; एक दिन जिसे ईमानदारी से परखा गया; एक ज़ख़्मी आदमी जिसे बताया गया कि उसकी नर्मी एक रहमत थी; और एक रात का आसमान जो दुआ पर ख़त्म होता है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. बीमार दिल मुबहम के पीछे भागता है और साफ़ को नज़र-अंदाज़ करता है — 'रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना' रोज़ाना की दुआ है, क्योंकि दिल पलटते हैं।

2. उसने बेटा चाहा और उसे मरयम मिली — 'और अल्लाह ख़ूब जानते थे जो उसने जना'।

3. रिज़्क़ उसे इबादत की जगह पर मिला — और किसी दूसरे की नेमत आपकी माँग बढ़ानी चाहिए, आपका हसद नहीं।

4. अल्लाह की मोहब्बत का सबूत रसूल ﷺ की पैरवी है — बिना पैरवी के दावा, बिना सबूत के दावा है।

5. रस्सी थामो — और उसे मिल कर थामो; और 'बेहतरीन उम्मत' तीन अमल से जुड़ी है, पैदाइश से नहीं।

6. सख़्ती कमरा ख़ाली कर देती है: उन्हें माफ़ करो, उन के लिए दुआ करो, और फिर उन से मशवरा करो।

7. नेक लोग भी गुनाह करते हैं — फ़र्क़ ये है कि वो उस पर जमे नहीं रहते। और वो आसमान देखते हैं और दुआ पर ख़त्म होते हैं।

रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिला, सुब्हानक फ़-क़िना 'अज़ाबन्-नार। आमीन।